आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे
सभी छायाचित्र - स्थानीय फोटोग्राफर

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	**मतदान का विवेकपूर्ण प्रयोग करें ज़रूर...**	५
आंतर भारती - १	**तुका म्हणे**	७
आंतर भारती - २	**बसव वचन**	९
आंतर भारती - ३	**तिरुवल्लुवर वाणी**	१०
काव्य भारती - १	**पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल**	११
चिंतन भारती - १	**भारत सरकार की वेबसाइटें प्राथमिक आधार पर पहले अंग्रेजी में क्यों खुलती हैं, राजभाषा में क्यों नहीं ?**	१२
पत्र भारती - २		१४
समाचार भारती-१	**साने गुरुजी के एकता के विचार समझाकर नई पीढि तैयार करने का आव्हान स्वीकारें.**	१५
समाचार भारती-२	**स्वामी अग्निवेशजी ने गुंजाया केरल में सामाजिक मान्यताओं का अविरल शंखनाद**	१८
समाचार भारती-३	**आन्तर भारती के आजीवन सदस्य नाना कुलकर्णी ने समाज समृद्धि की ज्योति जागृत रखी है**	२१
चिंतन भारती - २	**लोकसभा चुनाव का मतदाता घोषणापत्र**	२२
चिंतन भारती - ३	**इथोपिया : मानव सुनामी का कहर**	२४
परिचय भारती - १	**श्री.तो.मु.चिदंबर रघुनाथन**	२७
विशेष आलेख -१	**विस्थापन का दर्द : वास्तविक या कृत्रिम**	२९
परिचय भारती - १	**हिंदी की सेवा में... एक सार्थक यात्रा... शबरी शिक्षा समाचार**	३०
समाचार भारती-४	**शबरी परिवार मिलन**	३२

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

मतदान का विवेकपूर्ण प्रयोग करें ज़रूर...

इस समय चुनावी मौसम की गर्मी तेज़ है. लोकसभा के चुनाव के अलावा कुछ राज्यों के विधानसभाओं के चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है. निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न इलाकों में मतदान की व्यवस्था की गई है. लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में जन प्रतिनिधियों को चुनने के लिए नागरिकों को प्राप्त अधिकार का सदुपयोग हो और दूसरी ओर यह भी सुनिश्चित होना ज़रूरी है कि ईमानदार और सेवानिष्ठ, कर्मठ व सुयोग्य व्यक्ति को चुनने में अपना मताधिकार का प्रयोग हो. यदि कोई किसी व्यक्ति को चुनना नहीं चाहते हैं तो NOTA का विकल्प उच्चतम न्यायालय के आदेश पर इस बार मतदाताओं को मिलने जा रहा है. अयोग्य-निष्प्रयोज्य या भ्रष्ट साबित होने पर चुने गए जन प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार भी जनता के पास होने की ज़रूरत पर कई वाद विकसित हो गए थे मगर वह आज तक साकार नहीं हो पाया है. जनप्रतिनिधियों में अपराधिक इतिहासवालों की संख्याधिक्यता चौंकानेवाली है. यह बड़ी विडंबना है कि जनतंत्र का आधार भी अब बुरी तरह से बाहुबल, धनबल, भ्रष्ट तरीक़े होते जा रहे हैं.

चुनावी मौसम शुरू होने की वजह, घोषणा-पत्रों के माध्यम से कई आश्वासन भरते हुए राजनीतिक पार्टियों के नेता लोग मतदाताओं को लुभाने में अतिव्यस्त हैं. मतदाताओं को चाहिए कि इन घोषणा-पत्रों के आश्वासनों को तर्कपूर्ण ढंग से परखें और उन-पार्टियों, प्रत्याशियों के पूर्व-वृत्त और व्यक्तित्व को भी गौर करें. घोषणा-पत्रों में किए गए आसमानी आश्वासनों की पूर्ति की व्यावहारिकता, सीमा को ध्यान में रखा जाए. संवैधानिक प्रावधानों के तहत नागरिकों को जो मूलभूत सुविधाएं व अधिकारों की गारंटी होनी थी, उनकी अवहेलना कई संदर्भों में होती जा रही है. चुनावों में चुने जाए या नहीं, मगर कई नेता लोग अपने लिए तो सुरक्षित माहौल बना लेते हैं, जबकि साधारण जनता को तो कभी दाने-दाने के लिए तरसने की स्थिति आज भी उपस्थिति है. ऐसी विडंबनात्मक स्थितियों को दूर करने के लिए कोई आसमानी आश्वासनों की

ज़रूरत नहीं है. ज़मीनी हकीक़त को आश्वस्त कर जन-सेवा करनेवाले चुनावी प्रत्याशियों को चुनने में ही लोकहित है.

गुलामी के जंज़ीरों में फंसे भारत को मुक्त करने के प्रयासों में अपने सर्वस्व बलिदान करनेवाले त्यागपुरुषों के इस देश में भ्रष्ट, अपराधिक व्यक्तित्व के नेताओं की संख्या बढ़ती जा रही है. लोकतंत्र का अपहास राजनीतिक पार्टियों के गठबंधन के रूप में हो रहा है. भोगवादी संस्कृति के बढ़ते इस युग में जनतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा चुने गए नेता भी राजसत्ता की याद कराते हुए जन-संपत्ति का एक ओर दुरुपयोग करते हुए दूसरी ओर अपनी और पार्टी की संपत्ति को बढ़ाने के लिए भ्रष्टाचार के फैलने में बड़ी भूमिका निभाते जा रहे हैं. कल्याणकारी राज्य की संकल्पना से कहीं दूर व्यापारशाही की ओर बढ़ते भारत को बचाने में सभी मतदाताओं को अपने मताधिकार का विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग करना चाहिए. चुनाव की आचार संहिता के नाम से जो कुछ प्रतिबंध लग रहे हैं वह सब सामान्य जनता को इसी चुनावी मौसम के दिनों में तंग करने के तरीक़े ही साबित हो रहे हैं. तथाकथित बड़े राजनेताओं की करतूतों को रोकने की सक्षम व्यवस्था अभी सामने नहीं आ पायी है, क्योंकि पार्टी अनुयाइयों के समर्थकों के नाम से, मिलीभगत करनेवालों से कोई भरोसा नहीं है कि चुनावी आयोग के तमाम प्रतिबंधों का असर राजनेताओं पर पड़ने दिया जा रहा है.

चुने गए प्रतिनिधियों से सुशासन की अपेक्षा करने के क्रम में भ्रष्टाचार मुक्त सुयोग्य शासन के लिए पहली शर्त यह तो ज़रूरी है कि हर तरह के कार्य व सेवाओं के लिए समय सीमा निर्धारित होजाए. भ्रष्टाचार-मुक्त शासन के लिए यह भी हम ज़रूर सुनिश्चित कर लें कि राष्ट्र संपत्ति लूटने की आदतवालों को हम सबक निरंतर सिखवाते रहें. इस दिशा में एक सबल अस्त्र के रूप में मताधिकार का प्रयोग विवेकपूर्ण रूप से करें. आज मीडिया का एक बड़ा प्रतिशत भ्रष्ट या पक्षपाती बन चुका है, चुनावी आचार-संहिता और प्रत्याशियों द्वारा चुनावी प्रचार के लिए खर्च की सीमाओं के बहाने ही पैसे लेकर समाचार प्रकाशन की नीति, प्रवृत्ति (जो पेड़ न्यूज़ की संस्कृति के नाम से प्रचलित हो रही है) कई अख़बारों और चैनलों की अनिवार्य रीति बनकर लोकतंत्र में

(पृष्ठ ०८ पर...)

तुकाम्हणे

(मराठी)

आलिया भोगासी असावें सादर

आलिया भोगासी असावें सादर ।
देवावरी भार घालूं नये ।।धृ।।
मग तो कृपासिंधु निवारी सांकडें ।
येर तें बापुडें काय रंक ।।१।।
भयाचिये पोटीं दुःखाचिया रासी ।
शरण देवासी जातां भलें ।।२।।
तुका म्हणे नव्हे काय त्या करितां ।
चिंतावा तो आतां विश्वंभर ।।३।।

हिंदी काव्यानुवाद :-

भले-बुरे जो भी भोग फल, जीवन में हैं आते-जाते ।
हरि को उनका भार सौंपकर, रह निश्चिंत, शांत और हँसते ।।१।।
तब वह कृपानिधि कृपा करेगा, संकट दूर करेगा सारे ।
होवे कोई रंक वा राजा, सब उसके, सब एक से हैं रे ।।२।।
भय की आशंका से उपजते दुःखों के ढेर कितने ही ।
शरण प्रभु की जो पाता है, होता है उसका मंगल ही ।।३।।
तुका कहे क्या काम असंभव उसके लिए जो है विश्वंभर ।
उसका ही तू चिंतन कर ले, उसका ही तू स्मरण किया कर ।।४।।

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार,
परिमल २८/८१, विद्या नगर, उस्मानाबाद.

English Translation :-

Leave all you burdens to God

Aaliyaa bhogasi asawe saadara

Leave all your burdens to God and accept with all humility,
Everything that comes to you as a result of actions of the past lives.
The most compassionate Lord will remove all your obstacles.
Nothing can be expected of the beings of the lower order.
When you are faced with a lot of sorrow because of fear,
It will do good to surrender before the Lord.
Says TUKA, you need not have to do anything now.
It is now the worry of Lord Vishwambhara[1] to take care of you !

1. Lord Vishwambhara - Lord Vitthala.

English : D.S.VAJRAM,
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune-411016.

(पृष्ठ ६ से...)

मीडिया की भूमिका को भी उपहास के लायक बना रही है. अब अख़बार के पन्ने, मीडिया चैनलों में चुनावी प्रत्याशियों के संबंध में जो कुछ कथन, खबरें प्रकाशित, प्रसारित हो रही हैं, उनमें कई मामलों में पैसों का राज्य है. ऐसे कथनों, समाचारों को अंधाधुंध मानने पर पाठकों, श्रोताओं, दर्शकों के रूप में मतदाताओं को विवश नहीं होना चाहिए. विश्वस्त तरीक़ों, सूत्रों से ही चुनावी प्रत्याशी के चरित्र, पूर्ववृत्त, योग्यता व क्षमताओं से आश्वस्त होकर ही अपने मताधिकार का उत्तमोत्तम उम्मीदवार चुनने या कोई योग्य न लगने पर NOTA का विकल्प चुनने में अपने मताधिकार का प्रयोग करें. इस दिशा में जनचेतना के लिए अपने स्तर पर योग्य भूमिका ज़रूर निभाएं, क्योंकि भ्रष्ट मीडिया, स्वार्थी पार्टी अनुयाइयों से धोखा खाने में देर नहीं लगेगी, इनके प्रभावों से बचने के लिए सचेत और सतर्क रहें. लालचपूर्ण चुनावी घोषणाओं, भ्रष्ट-तरीकों से दिए जाने वाले उपहारों से बचकर विवेकपूर्ण ढंग से अपने मताधिकार का प्रयोग ज़रूर करें. **भारतीय नववर्ष की शुभकामनाएँ.**

- सी. जय शंकर बाबु

आंतर भारती - २

बसव वचन

मूल कन्नड वचन :

नानोंद नेनेदोडे तानोंद नेनेवुदु
नावित्रलेकेदेडे तानत्रलेळेवुदु
ता बेरेयन्नु बळलिसि काडितु
कुडल संगम कुडिहनेंदोडे
तानेन्न मुंदु गेडिसित्रुमाये

हिंदी काव्यानुवाद :

मैं एक चाहूँ तू कुछ और चाहे
मैं इधर खींचू तो तू उधर खींचे
वह कुछ और करके मुझे दुःख पहुँचाए
कूडल संगम देव से मिलने की चाह रखूँ तो
मुझे उससे दूर करें

भाष्य : महात्मा बसवेश्वर इस वचन में माया का दुष्प्रभाव कैसे रहता है, इसे संक्षप में बताते हैं. माया अर्थात् भ्रम. अयथार्थ, असत्य, झूठ माया के कारण ही मनुष्य दिग्भ्रमित होता है. सत्य से कोसों दूर जाता है. दर्शनशास्त्र में सत्य को ब्रह्मकहा गया है. आभासित सत्य को अर्थात् अयथार्थ को माया कहा है. माया के कारण सारे जीव सांसारिक जाल में फँसे हुए हैं. कबीर ने माया को दीपक कहा है, और उसकी ज्योति पर झेंप कर मरनेवाले पंतगे को जीव कहा है. एक अन्य स्थान पर उसे महाठगिनी कहा है. ईश्वर से साक्षात्कार करना अपने आप को सही रुप में पहचानना है. साधक यदि उस सत्य के समीप पहूँचने की साधना करता है तो माया उसे दूर भगाती है. इसे वही पहचान करता है जिस पर गुरु की कृपा होती है.

डॉ. इरेश सदाशिव स्वामी
'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, विजापूर रोड, सोलापूर - ४१३००४

आंतर भारती - ३

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लऱ़वियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्माम ६. वाळ्क्कैत्तुणै नलम् (सहधर्मिणी के सद्गुण)

मनैत्तक्क माण्बुडैयळ् आहित्तर्कोण्डान्
वळत्तक्काळ् वाळ्क्कैत्तुणै । (कुरल - ५१)

सुपत्नी कभी
पति-आय से ज्यादा
न करें खर्च ।

भावार्थ - सद्गुण संपन्न पत्नी अपने पति के आम से बढ़कर खर्च नहीं करती है ।

मनैमाट्चि इल्लाळ् कण् इल्लायिन् वाळ्क्कै
ऐनेमाट् चित्तायिनुम् इल् । (कुरल - ५२)

गृहिणी-गुण
न हो, अयोग्य ही है
गृहस्ति हेतु ।

भावार्थ - गृहिणी के गुणों से रहित गृहिणी अन्म गुणों से संपन्न होने पर भी गृहस्थ-जीवन के लिए व्यर्थ है ।

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

मैसूर

- टी.ई.एस.राघवन

खुशबूदार शहर औ, सुन्दर है मैसूर ।
गुलाब चंदन आदि से आकर्षक है मैसूर ।।
बतलाता है इतिहास, शासक थे चोलादि ।
दर्शनीय है मैसूर में चंदनवन महलादि ।।
चामुण्डेश्वरी मंदिर, गिरि पर विराजमान ।
शासक टीपू का महल, दर्शनीय है स्थान ।।
श्रीरंगपटनम में स्थित, मंदिर सुदर्शनीय ।
सोमनाथपुर में स्थित, देवालय कमनीय ।।
बांदीपुर में है वन्य, प्राणीमय उद्यान ।
बारहसिंगे, हाथी, हिरण, बाघच सुदृश्यमान ।।
चामुण्डीगिरि के निकट 'ललिता महल' बुलंद ।
इसमें शाही मेहमान रुकते थे सानंद ।।
वास्तुशिल्प की दृष्टि से मैसूर महल रम्य ।
चिडियाघर भी पास का पर्यटकों का रम्य ।।
वृन्दावन गार्डन रंग, बिरंगे कुसुमदार ।
शाम को रोशनियों में, फुहार हर्षाधार ।।
आर्ट गैलरी 'चाम' की नयनों को दृष्टव्य ।
नेशनल पार्क में विविध, निहगजाल दृष्टव्य ।।

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६०००००५.

मैसूर महल

भारत सरकार की वेबसाइटें प्राथमिक आधार पर पहले अंग्रेजी में क्यों खुलती हैं, राजभाषा में क्यों नहीं ?

- प्रदीप जैन

भारत की राजभाषा हिन्दी है उसके उपरांत भी भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, एवं भारत सरकार के लगभग सभी मंत्रालयों / विभागों / निकायों / कंपनियों / संस्थानों सार्वजनिक बैंकों की ९९% वेबसाईटें पूर्व-निर्धारित रूप से (बाई डिफॉल्ट) अंग्रेजी में ही खुलती हैं और 'हिन्दी में' का विकल्प अंग्रेजी वेबसाइट के मुखपृष्ठ पर दिया जाता है. अर्थात वेब जगत में भारत सरकार अंग्रेजी को खुले रूप में बढ़ावा और प्राथमिकता दे रही है और हिन्दी की सुध लेने को भी तैयार नहीं.

यह भारतीय संविधान, राजभाषा अधिनियम, नियम एवं भारत सरकार की राजभाषा नीति का खुला उल्लंघन है. कोई इस पर बोलने को तैयार नहीं है. आरटीआई के माध्यम से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री कार्यालय से लेकर विभिन्न मंत्रालयों में आवेदन लगा कर इस बारे में पूछा गया तो सभी की ओर से अलग-२ तरह के उत्तर प्राप्त हुए. जैसे राष्ट्रपति सचिवालय का कहना है कि इस बारे में कोई नियम नहीं है. प्रधानमंत्री कार्यालय का कहना है कि विदेशी लोग भारी संख्या में प्रधानमंत्री की वेबसाइट देखते हैं. राजभाषा विभाग तो आरटीआई में पूछे गए प्रश्न का कोई स्पष्ट उत्तर नहीं देना चाहता, भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण कहता है सभी सरकारी वेबसाइटें पहले अंग्रेजी में ही खुलती हैं इसलिए हमारी वेबसाईट भी अंग्रेजी में खुलती है. भारत की राजभाषा को भारत के प्रधानमंत्री कार्यालय एवं राष्ट्रपति भवन में भी प्राथमिकता नहीं दी जा रही तो जनता मंत्रालयों और विभागों से क्या आशा रख सकती है?

क्या राजभाषा को अंग्रेजी के ऊपर प्राथमिकता देने के लिए किसी नियम अथवा आदेश की आवश्यकता है जबकि संविधान का अनुच्छेद ३५१ एकदम स्पष्ट है, दुनिया का हर देश अपनी भाषा में काम करता है और उसे ही प्राथमिकता देता है इस बात को हम नागरिकों से ज्यादा आप लोग जानता हैं आप चीन, जापान, थाईलैंड, जर्मनी आदि प्रमुख देशों की भाषा नीति जानते हैं उन सब में. भारत

के प्रधानमंत्री से भी चीनी प्रधानमंत्री केवल चीनी भाषा में वार्तालाप करते हैं, फिर हमारे यहाँ इन पदों को अपनी भाषा और संविधान के निर्देशों के अनुपालन की चिंता क्यों नहीं ?

भारत सरकार की वेबसाइटों का अंग्रेजी में पहले खुलना राजभाषा अधिनियम १९६३ की धारा ३ (३) के अंतर्गत जारी कार्यालय ज्ञापन क्र. १२०२४/२/९२-रा.भा. (बी-२), दिनांक ६ अप्रैल १९९२ का सीधा और स्पष्ट उल्लंघन है पर कोई इसे स्वीकार नहीं करता.

भारत की आम जनता का विचार है कि भारत सरकार के मंत्रालयों / विभागों / निकायों / कंपनियों / संस्थानों / सार्वजनिक बैंकों की वेबसाइटें पूर्व-निर्धारित रूप से अंग्रेजी में खुलना संविधान ३४३-३५१, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, एवं राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, एवं राजभाषा नीति का स्पष्ट उल्लंघन है, जो कई वर्षों से निरंतर जारी है उसे रोकने के लिए राजभाषा विभाग को अब समय रहते स्पष्ट और ठोस नियम-निर्देश जारी कर देना चाहिए कि संविधान के अनुच्छेद ३४३-३५१, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, एवं राजभाषा नीति के समुचित पालन सुनिश्चित करने के लिए सभी सरकारी वेबसाइटें पहले हिन्दी में खुलें फिर राजभाषा विभाग की वेबसाइट की तरह १००% द्विभाषी रूप में बनें, जिसमें हिन्दी की पाठ्य सामग्री अनिवार्य रूप से अंग्रेजी के ऊपर/आगे रहे.

माना कि राजभाषा कानून प्रोत्साहन, पुरस्कार पर आधारित है पर संविधान की भावना को देखते हुए कम से कम सरकार स्पष्ट नियम और निर्देश तो जारी करे और ब्राजील, डेनमार्क, कनाडा, जापान, थाईलेण्ड, जर्मनी, अरब देश, तुर्की आदि में जो भारत से क्षेत्रफल और जनसंख्या के आधार पर काफी छोटे हैं, इनकी सभी वेबसाइटें उनकी अपनी राजभाषा में खुलती हैं, दुनिया में भारत को छोडकर ही शायद कोई देश होगा जहाँ कि सरकार द्वारा अपनी राजभाषा को प्राथमिकता ना दी जाती हो. हर छोटे बडे देश की सरकारें अपनी-२ राजभाषा के मान - सम्मान और उसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए कटिबद्ध हैं. चीन और कोरिया ने तो पिछले ३-४ वर्षों में ऐसे कंप्यूटर और अन्य उपकरण विकसित किए हैं जिनपर सबकुछ उनकी अपनी भाषा में होगा और अंग्रेजी का एक भी शब्द नहीं.

आजादी के ६७ वर्षों बाद भी भारत के नागरिकों द्वारा सरकारी विभागों / अधिकारियों को हिन्दी में भेजे हुए पत्रों और आरटीआई आवेदनों के उत्तर तक अंग्रेजी में भेजे जाते हैं जो सचमुच बेहद लज्जास्पद है, क्या भारत सरकार नागरिकों को उनकी अपनी भाषा में पत्रोत्तर प्राप्त करने का अधिकार भी सुनिश्चित नहीं कर सकती ?

अगस्त १९९९ से हिन्दी वेबसाइटें बनाने का नियम बना हुआ है पर आज १४ वर्षों के बाद भी भारत सरकार के एक-दो नहीं बल्कि दर्जनों मंत्रालयों/विभागों /निकायों/कंपनियों/संस्थानों ने अपनी हिन्दी वेबसाइटें चालू नहीं कीं! जनगणना आयुक्त भारत के महारजिस्ट्रार कार्यालय ने तो हिन्दी वेबसाइट उपलब्ध ना करवा पाने के लिए संसाधनों का अभाव बताया है, और गूगल अनुवादक जोड दिया है. उनके अनुसार गूगल अनुवादक सटीक (?) अनुवाद कर रहा है. ऐसे में हिन्दी ही अकेली क्यों अब उनकी वेबसाइट २५-३० विदेशी भाषाओं में भी बिना किसी कठिनाई के उपलब्ध हो गई है.

८/२७, विजय नगर, इंदौर - ४५२०१० (म.प्र.), ०९८२६३८१३०५

पत्र भारती -१

डॉ.एस.एन.सुब्बराव
२२१, डी.डी.उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - ११०००२, भारत.
फो. ०११-२३२२२३२९, २३२३७४९१
मो. ०९८६८९-४२३२९

प्रिय श्री सदाविजयजी,

हिलती रेल में बैठे हिंदी लिख रहा हूँ. अक्षर के लिए माफ करिए.

आंतर भारती मासिक पत्रिका का नया रुप, अच्छा है. बधाई. पकड़ना और पढ़ना दोनों आसान.

वर्धा बाल महोत्सव में इतनी कमियां थीं और मित्रों ने उपवास किया यह मुझे पत्रिका से ही मालूम पड़ा. कार्यकर्ता बराबर हसंते मिलते थे तो सोचा सब कुछ अच्छा चल रहा है. हां बच्चों के कार्यक्रमों के लिए सामान कम आए वह बादमें देखा.

सबक सीखते ही जाएंगे. पर सबकों से लाभ कब उठाएंगे ?

सबको प्यार व नव वर्ष को शुभकामनाएं.

प्यारा भाई
सुब्बराव

समाचार भारती -1

साने गुरुजी के एकता के विचार समझाकर नई पीढि तैयार करने का आव्हान स्वीकारें.

– कृषिमंत्री ना.शरद पवार

साने गुरुजी राष्ट्रीय स्मारक के दूसरे चरण के उपक्रम का संस्मरणीय उद्घाटन कार्यक्रम

आज की अस्थिर सामाजिक परिस्थिति के विरूद्ध लड़ने का सामर्थ्य साने गुरुजी के राष्ट्रीय एवं मानवतावादी विचारों में निश्चित है. इसलिए गुरुजी के केवल पुतले खडे करके सन्तोष न करते हुए उनके नीतिपूर्ण जीवनदाई विचारों के स्मारक स्थापित करने की दृष्टि से साने गुरुजी की जन्मशताब्दी वर्ष से (१९१९) वडघर, (ता.माणगाव, जि.रायगड) ये छत्तीस एकर के भव्य स्थल पर ''साने गुरुजी राष्ट्रीय स्मारक'' खडा करने का काम शुरू हुआ है. समस्त साने गुरुजी के प्रेमियों की दृष्टि से भी यहबात अभिमानास्पद तथा आनन्ददाई है.

इस स्मारक के बनाने में साने गुरुजी जीवन दर्शन दालन, संदर्भ ग्रन्थ, दृक श्राव्य केंद्र, आन्तर भारती संकुल, युवाभवन इत्यादि का समावेश है. दूसरे चरण का लोकार्पण समारोह दिनांक २५ जनवरी २०१४ को केन्द्रीय कृषिमंत्री माननीय श्री शरद पवार के करकमलों द्वारा तथा स्मारक समिति के अध्यक्ष श्री युवराज मोहिते की अध्यक्षता में संपन्न हुआ.

माननीय ना.शरद पवार अपने भाषण में बोले 'आज देश आह्वानात्मक परिस्थिति में से गुजर रहा है. ऐसी दशा में राष्ट्रीय, सामाजिक एकता और मानव धर्म का विचार देकर भावी पीढि को बनाने का कार्य अखंड रूप से साने गुरूजी राष्ट्रीय स्मारक के द्वारा होना चाहिए. संस्था का भविष्य काम की निरन्तरता पर निर्भर रहता है. यहॉ की खुली जगह पर फलों के वृक्ष लगाने पर स्मारक को आय का साधन होगा ऐसी सलाह दी. कृषिमंत्री ना.पवार ने आगे कहा कि ''साने गुरुजीने उत्तम साहित्य सादी तथा सरल भाषा में लिखकर भावी नई पीढि को प्रेरणा दी है. अन्य भाषाओं के अच्छे विचार उन्होंने अपने साहित्य द्वारा मराठी में लाए. इसके पीछे एकता और मानव धर्म के मूल्य की भावना थी. साने गुरुजी की एकता की भावना युवा पीढि में फैलाकर नई पीढी तयार करने का आव्हान हमें स्वीकारना चाहिए.''

स्मारक समितिके तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री युवराज मोहिते ने स्मारक

बनाने के पीछे की संकल्पना बताई. इस प्रसंग पर ज्येष्ठ समाज सेवक बाबा आढाव, आन्तर भारती भाषा केन्द्र की अध्यक्षा प्रा.पुष्पा भावे, ज्येष्ठ साहित्यकार वसंत आबाजी डहाके, ग्रामविकास मंत्री जयंत पाटील, रायगड जिले के पालकमंत्री सुनील तटकरे ने भी अपने विचार रखे. कार्यक्रम में राष्ट्रवादी काँग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष भास्कर जाधव, जिल्हाधिकारी एच.के.जावळे, पुलिस अधीक्षक अंकुश शिंदे, जिला परिषद के मुख्य अधिकारी अण्णासाहेब मिसाळ आदि मान्यवर उपस्थित थे.

मध्यांतर के बाद के सत्र ''सद्यः परिस्थिति के आव्हान'' इस विषयपर परिसंवाद आयोजित किया गया. इस परिसंवाद में समाज के सक्रिय मान्यवर कार्यकर्त्ताओं ने व्यक्त किए हुए विचार उद्बोधक तथा मार्गदर्शक थे.

आदिवासियों की समस्याओं के विरूद्ध लडने वाली कार्यकर्ता उल्का महाजन ने कातकरी आदिवासियों के न्यायिकहक्क के लिए चल रहा आंदोलन तथा संभाव्य दिल्ली-मुंबई-इंडस्ट्रियल कॉरिडोर का उल्लेख करके हमारे विचारों में गुणात्मक मूल्य होंगे तो ही समाज हमारे पीछे चलेगा. ऐसा प्रतिपादित किया.

एडवोकेट सुरेखा दळवी ने 'आदिवासियों को अच्छे स्वप्न देखनेका सिखाकर तथा पूरे करने के लिए उनमें आत्मविश्वास निर्माण करने का काम बडे स्तर पर आज शुरु होना चाहिए' ऐसा कहा.

गिरणी कामगार नेता दत्ता इस्वलकर ने कहा, गिरनी कामगारों की हडताल से संस्था चली गई पर प्रतिष्ठा साबित थी. वस्त्रोद्योग ध्येय न होने से गिरनी कामगार विस्थापित हुए. पर आज उनके घर के स्वप्न पूरे हो रहे हैं. यह महत्वपूर्ण बात है.

साधना के भूतपूर्व संपादक दिवंगत पद्मश्री नरेन्द्र दाभोळकर की कन्या तथा अंधश्रद्धा निर्मूलन की कार्यकर्ता मुक्ता दाभोळकर ने ''जादूटोणा विरोधी कायदा का प्रभाव दिख रहा है. युवकों का प्रचंड प्रतिसाद इस आंदोलन को मिलता है. चिकित्सक के दृष्टिकोण से तथा विवेकपूर्ण व्यवहार से सबका भला होगा.'' ऐसा कहा.

अस्वस्थता कला से जल्द व्यक्त होती है. हमें आज की युवा पीढी को व्यक्त होने के लिए स्पेस देना चाहिए. अन्यथा वे किसी भी आकर्षण की तरफ चले जाऐंगे. ऐसा इशारा शाहीर संभाजी भगत ने दिया.

महामार्ग विभाग की पुरुषार्थी पुलिस अधीक्षक रश्मि करंदीकर ने परिसंवाद में कहा ''जनता को पुलिस के बारे में दृष्टिकोण बदलना चाहिए. आखिरकार वहवर्दी में भी एक 'मनुष्य' ही हैं! उसमें भी मन है. पुलिस दल में अच्छे

अधिकारी होने की वजह से ही हम निश्चिन्त, आनंदित व शान्त रहते हैं. दुर्भाग्य से पुलिस विभाग की अच्छी बातों पर हम ध्यान नहीं देते. बहुत से युवा आज पुलिस विभाग में आ रहे हैं तथा उनके प्रति मैं आशावादी हूँ.

महामर्ग पर दुर्भाग्य से दुर्घटना हो जाए तो पुलिस चौकी, रुग्णालय गॅरेज इत्यादि महत्वपूर्ण जानकारी देनेवाली एन्ड्रॉईड आप्स की सुविधा पुलिस विभाग की तरफ से शुरु होने की महत्वपूर्ण जानकारी श्रीमती रश्मि करंदीकर ने बोलते समय दी.

परिसंवाद का सूत्रसंचालन अध्यक्ष श्री युवराज मोहिते ने किया.

स्थानिक परिसर के तथा मुंबई, ठाणे तथा महाराष्ट्र के अनेक भागों से साने गुरुजी बालविकास मंदिर की तरफ से सर्वश्री संतोष केसरकर, तानाजी सावंत, चन्द्रकान्त भोगले, रविकुमार पौडवाल, अरविन्द क्षीरसागर, नरेश सावंत, सौ.सुधाताई सदृश प्रभृति कार्यकर्ता आत्मीयता से उपस्थित थे. संयोजकों का मनःपूर्वक धन्यवाद. साने गुरूजी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट के कार्य निरन्तर वृद्धिशील रहें.''

मराठी वृत्त लेखक - जीवन द. यादव

अनुवाद : डॉ.मधुश्री आर्य

(छायाचित्र पृ. १, २ पर)

संकुल - उद्घाटन
मा.शरद पवार जी के
करकमलों द्वारा

संकुल भवन को
देखते हुए,
अतिथिगण

समाचार भारती -२

स्वामी अग्निवेशजी ने गुंजाया केरल में सामाजिक मान्यताओं का अविरल शंखनाद

३ फरवरी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी मलयालम साहित्य के प्रवर्तक थुंचचाथू एजूथावन (१६वीं शताब्दी) के बड़े महत्त्वपूर्ण तथा भव्य कार्यक्रम थुंचन फेस्टिवल के उद्घाटन के लिए कोजी कोड (कालीकट) एयरपोर्ट से ४० किलोमीटर दूर तिरूर नामक ऐतिहासिक स्थल पर पहुँचे तो उनका वहां के आयोजकों द्वारा भव्य स्वागत किया गया. प्राथमिक औपचारिकताओं से निवृत्त होकर स्वामी जी ने शाम अरब सागर तट पर सूर्यास्त का आनन्द लेकर रात्रि विश्राम किया. अलगे दिन ४ फरवरी, २०१४ को मध्यान्ह ११.३० बजे से १.३० बजे तक स्वामी अग्निवेश जी ने विषय पर बोलते हुए सारे विषय को वैदिक एकेश्वरवाद पर लाकर खड़ा कर दिया और कहा कि एक सर्वव्यापी निराकार, न्यायकारी ईश्वर की अवधारणा को जब तक सभी धर्म, सम्प्रदाय स्वीकार कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओर-पृोत नहीं होते तब तक प्रजातंत्र और मत निरपेक्षता की जड़ें मजबूत नहीं होंगी और साम्प्रदायिकता का दानव बार-बार मानवीय सम्बन्धों को हिंसा का शिकार बनाता रहेगा. अपने दो घंटे के धारा-प्रवाह अंग्रेजी में दिये भाषण और प्रश्नोत्तर से स्वामी अग्निवेश जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्य समाज के दूसरे नियम को केरल साहित्य के प्रथम कोटि के बुद्धिजीवियों एवं कालीकट विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं में विशद व्याख्या द्वारा स्थापित किया.

वहाँ से चलकर केरल समाज के जाने-माने नेचर लाईफ इंटरनॅशनल के डॉ.जैकब वडकनचेरी के साथ वे युवा साथी अब्दुल लतीफ के घर गये जहां शुद्ध शाकाहारी भोजने ग्रहण कर स्वामी जी ने विश्राम किया. तदुपरान्त कालीकट शहर के मध्य स्थिति आर्य जगत के वैदिक विद्वान आचार्य राजेश द्वारा संचालित कश्यप ऋषि आश्रम पहुँचे. वहाँ श्री राजेश जी, श्री अरुण जी आदि ने स्वामी जी का भव्य स्वागत किया और उपस्थित श्रद्धालुओं को स्वामी जी ने उनके भव्य सोमयाग आयोजन के लिए बधाई देते हुए यज्ञाग्नि को संकल्पाग्नि में बदल कर सामाजिक क्रांति का आह्वान किया.

५-६ फरवरी को अपने व्यस्त कार्यक्रम में स्वामी जी ने सन् १९२१ में आलवे शहर में स्थापित यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज (यू.सी.कॉलेज) के सभागार में

तमाम प्राध्यापकों, छात्र/छात्राओं को प्रोअक्टीव सोशल स्प्रीचुलिटी पर आधारित व्हॅल्युस इन एज्युकेशन पर डेढ़ घंटे प्रवचन दिया. इस महाविद्यालय में १९२५ में महात्मा गांधी जी ने आम का जो वृक्ष लगाया था व प्राचार्य कार्यालय के बाहर स्मारक रूमप में अभी भी अवस्थित है.

अगले कार्यक्रम में स्वामी अग्निवेश जी कोचीन शहर में नेचर लाइफ इंटरनेशनल के सभागार में डॉ.जैकब की माता श्री की याद में आयोजित पुरस्कार समारोह में सिस्टर जैसी को नवाजा तथा वैदिक मान्यताओं पर अपने उद्‌गार रखे. तत्पश्चात् स्वामी जी ने भारत के अनन्यतम् न्यायविद् मोस्ट इमेननट जरीस्ट ९९ वर्षीय जस्टिस वी.आर.कृष्ण अय्यर के महात्मा गांधी रोड स्थित सद्‌गमय निवास पर जाकर भेंट वार्तालाप किया. वहीं पूर्व जस्टिस शमसुद्दीन से बात की. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायमूर्ति जस्टिस के.टी. थॉमस से फोन पर लंबी बात की. तदुपरान्त अर्नाकुल क्लब में प्रेस कांफ्रेस किया और ट्रेन द्वारा वापस तिरूर तथा कार द्वारा प्रसिद्ध आर्य वैधशाला के लिए मशहूर शहर कोट्टाकल पहुँचे. कोट्टाकल आर्य वैधशाला में स्वामी जी का चेयरमैन तथा प्रबन्धक मंडली द्वारा भव्य स्वागत हुआ.

तत्पश्चात् स्वामी जी ९० वर्ष से चले आ रहे इस्लाही मूवमेन्ट और मुजाहिद कांफ्रेन्स के उद्‌घाटन के लिए विशाल मैदान में पहुँचे. इसके भव्य पंडाल में लगभग २ लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था थी. जाते ही दिल्ली के प्रसिद्ध इस्लामिक विद्वान् मौलाना बहीदुद्दीन से मुलाकात हुई और सभी उपस्थित महानुभावों से परिचय संपर्क हुआ. ऐतिहासिक आयोजन के अध्यक्ष डॉ.हुसेन मडावूर ने स्वामी जी का जोरदार स्वागत किया. अपने ४० मिनट के सारगर्भित उद्‌घाटन भाषण में स्वामी अग्निवेश जी ने उपस्थित जन-समुदाय को ऋग्वेद के संगठन सूक्त ''संगच्छध्वं..... के आधार पर इस्लाम के आधारभूत सिद्धान्त तौहीत का समर्थन करते हुए ''ईशावास्य इदंसर्व.... की व्याख्या तथा एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति के आधार पर एक ईश्वर, (एक ही अल्लाह, गॉड, वाहेगुरु आदि) की सुन्दर विवेचना की. बार-बार करतल ध्वनि से जन-समुदाय ने आर्य संन्यासी की बातों को हृदयंगम कर शराब के विरुद्ध संघर्ष के लिए एकजुटता, नर-नारी समता, जातिवाद तथा जड़ पूजा का विरोध, पर्यावरण की रक्षा आदि मुद्दों पर वैदिक मान्यताओं को इस्लाम के पालन के साथ जोड़कर आगे बढ़ने का संकल्प लिया. स्वामी जी ने पशु हिंसा का, मांसाहार का विरोध करते हुए शाकाहार की प्रतिष्ठा की और मदरसा के बदले आधुनिक शिक्षा का समर्थन किया. ❑

सूचना

आंतर भारत विश्वस्त मंडल,

आंतर भारती राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्यगण,

आंतर भारती के समस्त आजीवन सदस्य गण !

वार्षिक विश्वस्त/कार्यसमिति बैठक का निमंत्रण एवं

पंढरपुर सत्याग्रह एवं पू.यदुनाथजी थत्ते स्मृति समारोह

का **निमंत्रण.**

इस वर्ष **मध्य प्रदेश** में

प्रतिवर्ष की भांति १० मई २०१४ को इंदौर के

कुंति सभागृह में आयोजित

C/o आनंद मोहन माथुर सभागृह

बापट चौराहा, सुखलिया, इंदौर

कृपया अधिक से अधिक संख्या में इंदौर १० मई '१४

की प्रातः ९ बजे तक पहुंचे. आगमन की सूचना

संपर्क

तपन भट्टचार्य

संघटक, आन्तर भारती (म.प्र.)

०९८२६०११४१३

e-mail : tapanb55@rediffmail.com

सदाविजय आर्य	**प्रिंस अभिषेक अज्ञानी**	**पांडुरंग नाडकर्णी**	**आंनद मोहन माथुर**
सचिव	**कार्यवाह**	**कार्यध्यक्ष**	**अध्यक्ष**

अब अपनी रचनाएँ इस पते पर भेजें

डा.सी.जयशंकर बाबु

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग पांडीच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेठ, पुद्दुच्चेरी - ६०५०१४

चलध्वनि संपर्क : ०९८४३५०८५०६

ईमेल-editorbabuji@gmail.com / वेबसाईट-www.yugmanas.blogspot.com

आन्तर भारती के आजीवन सदस्य

नाना कुलकर्णी ने समाज समृद्धि की ज्योति जागृत रखी है

पुणे-ज्येष्ठता के साथ साथ आनेवाली निराशा एक बड़ी समस्या होने पर भी नाना ने अपने काम के माध्यम से सब ज्येष्ठों के सामने आदर्श निर्माण किया है, ऐसा मत प्राध्यापक बाबा फणसकर ने व्यक्त किया.

सुराज्य शक्ति संघटना, बालगन्धर्व संगीत रसिक मंडल, विरंगुळा केन्द्र जैसी विविध सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं के गठन तथा निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिकावाले स.गो.तथा नाना कुलकर्णी का ८४ वें वर्धापन दिवस के निमित्त आयोजित ''हौस मौज'' सत्कार कार्यक्रम के अध्यक्षीय भाषण में कहा. बेटी दोहते की पत्नी ने नाना का स्वागत सत्कार किया. बड़ा सा केक काटते हुए उपस्थित लोगों की तालियां और सत्तर वर्ष से अधिक उम्र वाले ज्येष्ठ युवकों के शुभेच्छा की वर्षा में यह हृदयस्पर्शी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ. इस प्रसंग पर बालगन्धर्व संगीत रसिक मंडल के अध्यक्ष गायक सुरेश साखवळकर, भूतपूर्व उपमहापौर दीपक मानकर, युवा नेता करवा मानकर आदि मान्यवर उपस्थित थे. तळेगाव के साप्ताहिक अंबर के रौप्य महोत्सव में पदार्पण करने की कारण 'अंबर' के सम्पादक सुरेश साखवळकर का भी सत्कार किया गया.

इस प्रसंग पर बोलते हुए फणसळकर ने कहा कि जीवन में हम ही अनेक आदमी जोड़ते हैं. उसमें अपना स्वार्थ होता है पर नाना कुलकर्णी ने निःस्वार्थ तथा अपनत्व से आदमी जोड़े हैं. विविध संस्था और संघटनाओं के लिए काम करते समय अपनी जेब से खर्चा किया. धन जोडने की जगह पर मन जोडने का कार्य ज्येष्ठोंने आत्मसात करे तो जीवन की ढलती आयु में निराशा दूर होगी. इस समय भूतपूर्व महापौर दीपक मानकर जी ने नाना के जन्म दिन पर शुभकामनाएँ दीं. इस प्रसंग पर बोलते हुए नाना कुलकर्णी ने कहा, मेरे व्यक्तिव के निर्माण में अमोल योग दान देनेवाले व्यक्ति और संस्थाओं का मैं ऋणी हूँ समाज के लिए हमारे जो कर्तव्य हैं उन्हें ध्यान में रखने पर अपने समाज की प्रगति अधिक तीव्रगति से होगी.

इस प्रसंग पर ''संगीत कान्होपात्रा'' इस नाटक के कलाकार महेश पाटणकर, सुरेश साखवळकर, रवीन्द्र कुलकर्णी, गजानन खळदकर, अवंती बायस, अनुराधा राजहंस, माधुरी कान्हेरे तथा ज्येष्ठ ऑर्गन वादक पंडित जयराम पोतदार, विद्यानंद देशपांडे, मोहन पारसवीस, विनय कशळकर, संजय गोगटे, अरविन्द घैघास, कार्यक्रम में स्वागत तथा प्रस्ताविक बाल गंधर्व संगीत रसिक मंडल के अध्यक्ष सुरेश साखवळकर ने किया, अनुराधा राजहंस ने सूत्रसंचालन किया. अवंती बायस ने सभी का आभार व्यक्त किया. ❑

लोकसभा चुनाव का मतदाता घोषणापत्र

गांधी स्मारक निधि

लोकतंत्र में चुनाव एक उत्सव की तरह आना चाहिए. लेकिन दुर्भाग्यवश इसे महासंग्राम की संज्ञा दी गई है. उत्सव या समारोह के अपने कायदे और मर्यादाएं होती हैं और युद्ध के अपने तौर-तरीके. अतः यह हमारे ऊपर है कि हम चुनावों को किस श्रेणी में रखते हैं. हम इसे जिस श्रेणी में रखेंगे वैसे ही परिणाम हमारे सामने आएंगे. गांधी स्मारक निधि ने मतदाताओं को जागृत करने के लिए मतदाता घोषणापत्र जारी किया है. उम्मीद है यह हम सबको बेहतर संवाद स्थापित करने में मददगार होगा. (का.सं.)

चुनाव का आना किसी भी संसदीय लोकतंत्र की सबसे स्वाभाविक और सरल घटना होनी चाहिए. लेकिन हमारा दुर्भाग्य यह है कि यहां चुनाव का मतलब होता है निजी और सार्वजनिक जीवन की सारी क्षुद्रताओं और कमजोरियों का उभर आना. हम देख ही रहे हैं कि जैसे-जैसे लोकसभा के चुनाव निकट आ रहे हैं, राजनीतिक व सामाजिक जीवन में कटुता और कलुष बढ़ता जा रहा है. आचार्य विनोबा भावे ने चुनावी मानसिकता का विवरण देते हुए एक बार कहा था, हमारे यहां चुनाव आत्म-प्रशंसा, परनिंदा और मिथ्या भाषण का अवसर होता है.

चुनाव से ठीक पहले मतदाता का यह घोषणापत्र जारी करते हुए हम गांधीजन सभी राजनीतिक दलों से उनके कार्यकर्ताओं-समर्थकों से सर्वप्रथम यही अपील तो करना चाहते हैं कि सार्वजनिक जीवन और व्यवहार का स्तर इतना नीचा मत गिराइए कि चुनाव के बाद अपने मुहल्ले-समाज में सर उठाकर चलने की जगह ही न बचे. समाज का नैतिक व व्यावहारिक स्तर बनाकर रखना हर सदस्य की जिम्मेदारी है. हम सब याद रखें कि इस समाज में हमारे राजनीतिक विरोधी ही नहीं रहते हैं, हमारे बच्चे और हमारा परिवार भी जीता व सांस लेता है. उसे जहरीला बनाना अपने पांव पर आप ही कुल्हाड़ी मारने जैसा या जिस डाल पर बैठे हैं उसे ही काटने जैसी मूढ़ता है. हम सब इससे बचें और अपने समाज को बचाएं.

आज हम राजनीतिक दलों के ऐसे जंगल में रहते हैं जहां संख्या पर बहुत जोर है, गुणवत्ता पर नहीं. राजनीतिक व्यवहार व दिशा के स्तर पर, कार्यक्रमों व नीतियों के स्तर पर, प्रशासन व कानून -व्यवस्था के स्तर पर किसी राजनीतिक दल में हमें कोई फर्क दिखाई नहीं देता है. लंबे समय से सत्ता के खेल में शामिल रहने के कारण इन सबमें एक सी दिशाहीनता व जड़ता ने जगह बना ली है. ५४७ सीटों वाली हमारी

लोकसभा जैसे एक खास सुविधा प्राप्त वर्ग का आरामगाह बन गई है, जहां म्यूजिकल चेयर की तरह सत्ता का खेल चलता है. पार्टी, पैसा, परिवार आदि से संपन्न लोग इसमें भागीदारी करते हैं और एक दूसरे की मदद करते हुए सदा सत्ता वर्ग में बने रहते हैं.

अगर आम मतदाता आज की तरह ही असंगठित और उदासीन बना रहा तो पूरी संभावना है कि आदर्श व मूल्यविहीन हमारा सत्ताधारी वर्ग इन्हें भी अपने रंग में रंग ले. इसलिए हमें यह जरूरी लगता है कि अपने-अपने क्षेत्र में, उम्मीदवारों की गहरी पड़ताल करें और जहां-जहां भी हम इन्हें बेहतर व भरोसे के लायक पाएं, वहां-वहां इनकी सफलता सुनिश्चित करें.

आज देश के सार्वजनिक जीवन पर राजनेताओं-पूंजीपतियों-नौकरशाहों के सबसे भ्रष्ट तत्वों का कब्जा बना हुआ है. नीतियां बनाने से लेकर उनके कार्यान्वयन तक, सबकुछ जैसे इनके ही हाथों में गिरवी है. कभी लोकतंत्र की परिभाषा हुआ करती थी- जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन! आज यह परिभाषा पूरी तरह बदल गई है. आज लोकतंत्र के नाम पर यही लोकविहीन भ्रष्ट तंत्र भर बचा है. इसलिए हम कहते हैं कि यह चुनाव हमें लोकतंत्र को बचाने और बनाने का भी संभवत: आखिरी मौका देता है. आप सावधान रहें और सावधानी से परखें कि जो कुख्यात भ्रष्ट है, शराबी है या शराब का धंधा करता है, सरकारी योजनाओं-परियोजनाओं को अपनी या अपने परिजनों की मुट्ठी में रखता है, जातीय या साम्प्रदायिक नारे के बल पर अपनी राजनीतिक दुकानदारी चलाता है अथवा गुंडों का आतंक फैलाकर हमारा वोट हड़पना चाहता है - ऐसा व्यक्ति किसी भी पार्टी से टिकट लेकर क्यों न सामने आ जाए, उसे हमारा वोट नहीं मिलना चाहिए. ऐसे लोगों को वोट देकर लोकसभा में भेजना आत्महत्या के बराबर है.

हम ऊंची व साफ आवाज में सबसे कहना चाहते हैं कि हमें भी विकास चाहिए. लेकिन यह महज वादों वाला विकास नहीं, बल्कि धरती पर उतरने वाला पूरा विकास चाहिए और आज ही चाहिए. जो प्यासा है, उसकी प्यास आज ही बुझनी चाहिए, जो बेघर है उसे आज ही छत मिलनी चाहिए, जो बीमार है उसे दवा और जो पढ़ना चाहता है उसे विद्यालय मिलना चाहिए, किताबें मिलनी चाहिए, शिक्षक मिलना चाहिए और ऐसा विद्यालय मिलना चाहिए जहां अनुशासन हो, स्नेह हो और पढ़ाई हो. जब राशन की दुकान पर राशन नहीं मिलता हो, नलों में पानी नहीं आता हो, बिजली के खंभे भर हों पर बिजली न हो, सड़कों में गड्ढे न हों बल्कि गढ्ढों में सड़कें हों, जब पुलिस अपराध को रोकने में सुस्त लेकिन अपराधियों को बचाने में सक्रिय हो, जब महिलाओं की इज्जत सुरक्षित न हो और महिलाओं के लिए आगे बढ़ने के अवसर सुरक्षित न हों, जब

(पृष्ठ २६ पर...)

चिंतन भारती - ३

इथोपिया : मानव सुनामी का कहर

- थामस सी माऊंटेन

इटली और ग्रीस में उत्तरी अफ्रीकी शरणार्थियों से भरी नावों को डूबने को लेकर मचा कोलाहल सारी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है. वहीं अफ्रीका के एक अन्य देश इथोपिया में प्रतिदिन ही ऐसा घटित हो रहा है. इसकी वजह वहां की सरकार का जातीय भेदभावपूर्ण रवैया है. विशिष्ट जाति समूहों को भूख से मारकर सुनियोजित ढंग से उनका नरसंहार हो रहा है. वहीं दूसरी ओर इथोपिया को विश्व में सर्वाधिक विदेशी आर्थिक मदद मिलती है. भारतीय उद्योगपतियों के भी वहां के हित किसी से छुपे नहीं हैं. चीन भी वहां पैठ जमा रहा है. क्या इस अन्याय में संपूर्ण विश्व की सहमति है. इथोपिया की त्रासदी को सामने लाता महत्वपूर्ण आलेख. -कासं.

पिछले एक दशक से प्रति वर्ष १० लाख से ज्यादा इथोपियाई नागरिकों ने या तो अपनी मातृभूमि को छोड़ दिया है या वे वहां से भाग खड़े हुए हैं. ये सिलसिला अभी भी बदस्तूर जारी है. जहां एक ओर टेलीविजन के पर्दे पर इटली के द्वीप लाम्पेडस में उत्तरी अफ्रीका के डूबे पलायनकर्ताओं की तस्वीरों की भरमार है वहीं हिंद महासागर या लाल समुद्र के निचले तल पर स्थित यमन के तटों पर हजारों हजार इथोपियाई शरणार्थियों की हड्डियां अचिन्हित कब्रों में दबी पड़ी हैं.

आप पूछ सकते हैं कि एक करोड़ लोगों की यह मानव सुनामी के प्रति विश्व इतना अनजान क्यों है? और क्यों एक करोड़ इथोपियाई नागरिक यानि देश के हर आठवें व्यक्ति में से एक अपनी जान जोखिम में डालकर विदेशों खासकर अनजान द्वीपों में शरण ले रहे हैं? इसका उत्तर इथोपियाई शासन की नीतियों में छुपा है, जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ ने ''खाद्य एवं स्वास्थ्य सेवा बाधित करने वाली'', ''घर फूंक विद्रोह या आतंकवादी विरोधी रणनीतियां'' और कई मामलों में ''जाति संहार'' तक कहा है.

अधिकांश इथोपियाई शरणार्थी ओरोमो राष्ट्रीयता के हैं. गौरतलब है कि इथोपिया की आधी जनसंख्या यानि करीब ४ करोड़ ओगाडेन के सोमालिया मूल की हैं. दक्षिणी इथोपिया के ये दोनों अंचल विश्व में मनुष्यों पर अभी तक जानकारी में लाए गए सबसे लंबे चलने वाले सर्वाधिक अमानवीय व क्रूर व्यवहार के साक्षी रहे हैं. ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि अठारहवीं शताब्दी के अंत में 'सम्राट' हेले सेलासी के पूर्वजों ने पश्चिमी देशों द्वारा समर्थित ऐबसिनिअब सामंतवादी उपनिवेशवाद के दौरान वहां निवासरत ओरोमो में से आधों को कत्ल कर दिया था. पिछले कुछ वर्षों से 'अफ्रीका का सींग' कहे

जाने वाले इस देश को पिछले ६० वर्षों के सबसे भयंकर अकालों का सामना करना पड़ रहा है. लेकिन इस भयानक आपदा से प्रभावित ओरोपिया एवं ओगाडेन संप्रदायों को इथोपियाई शासन खाद्य एवं स्वास्थ्य संबंधी मदद पहुंचने से रोक रहा है. ऐसा क्यों है कि ऐसी मानवीय त्रासदी के समय में विश्व के एक देश को अपने यहां से रेडक्रॉस और बिना सीमा वाले चिकित्सकों को निष्कासित करने की अनुमति दे दी जाती है और इतना ही नहीं अंतरराष्ट्रीय समुदाय उसके इस कार्य की भर्त्सना भी नहीं करता?

सवाल उठता है कि ऐसा केवल इथोपिया में ही क्यों?

संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वीकारा है कि इस अकाल से केवल सोमालिया में ढ़ाई लाख लोगों की भूख से मृत्यु हुई है. वहीं ओरोमिआ और ओगाडेन तो इससे भी बड़ी संख्या में मारे गए हैं. किसी देश में पिछले दो वर्षों में भूख से पांच लाख लोगों की मौत हुई हो और दुनिया में इसे लेकर कोई हंगामा नहीं? एक समय वहां यह स्थिति थी कि यहां प्रतिदिन भूख से एक हजार से अधिक व्यक्ति जिनमें अधिकांश महिलाएं, बच्चे और बूढ़े थे, मर रहे थे और हमें बदले में क्या मिला? न्यूयॉर्क टाईम्स के अनुसार सीआईए की 'डर्टी वार' (घिनौने युद्ध) पर लिखा बेस्ट सेलर उपन्यास 'हार्न ऑफ अफ्रीका'. यह उपन्यास भी कमोवेश इस दुर्दांत अपराध की भर्त्सना करने में असफल रहा.

इथोपिया को विश्व में सर्वाधिक मदद खासकर पश्चिमी देशों से मिलती है. सूत्रों के अनुसार अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोश के आदिस अबाबा (इथोपिया की राजधानी) स्थित कार्यालय से यह बात सामने आई है कि इथोपिया का आयात करीब १२ अरब डॉलर प्रति वर्ष पर पहुंच गया है और इसका निर्यात महज २ अरब डॉलर है. यानि प्रति वर्ष १० अरब डॉलर या तो 'मदद', 'ऋण' या 'निवेश' के माध्यम से आ रहे हैं, जिसकी वजह से इथोपिया पूरी तरह से विदेशी वस्तुओं पर निर्भर हो गया है. लेकिन दु:खद यह है कि इसके बावजूद पूरा विश्व हजारों हजार लोगों के भूख से मरने को या प्रति वर्ष एक करोड़ लोगों के देश छोड़ देने को रोक पाने में असमर्थ है?

पिछले दो वर्षों में हमने २० लाख से ज्यादा इराकी शरणार्थियों और अब २० लाख से अधिक सीरियाई शरणार्थियों से संबंधित रिपोर्टें देखी हैं. वहीं दूसरी ओर इससे दुगनी से भी ज्यादा संख्या में इथोपियाई शरणार्थी बन चुके हैं और विश्व कमोवेश इस वास्तविकता से अनजान है? जब मैं इन अपराधों की बात कर रहा हूं तो भूतकाल या अतीत की बात नहीं कर रहा हूं. आज भी ३000 से ज्यादा इथोपियाई नागरिक प्रतिदिन अपना घर छोड़ रहे हैं. यानि करीब एक लाख प्रतिमाह और दस लाख प्रति वर्ष. अनेक लोग नावों से सोमालिया के तट से यमनी तटों की ओर इस उम्मीद में पलायन करते हैं कि वे वहां सुरक्षित रहेंगे. लेकिन कितनी ही नावें समुद्र में सबको साथ लेकर डूब जाती हैं या इससे भी बुरा यह है कि न मालूम कितने लोगों को तट पर पहुंचने से पहले ही समुद्र में

फेंक दिया जाता है. इनकी वास्तविक संख्या हमें शायद कभी भी पता नहीं चलेगी.

इस क्षेत्र की निगरानी कर रही अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां भी इन मानव तस्करी माफियाओं द्वारा चलाए जा रहे इस शैतानी व्यापार को रोकने के बजाए इसी समुद्र में बड़ी जहाजी कंपनियों के हितों की रक्षा में अधिक लगी रहती हैं. क्या आपने कभी किसी मानव तस्करी मुख्यालय में ड्रोन या कमांडो हमले की बात सुनी है? क्या आपने इस नराधम की प्रतीक मानव त्रासदी को अंजाम देने वालों को किसी 'मोस्ट वाटेंड' की सूची में देखा है? निराशा की बात तो यह है कि इथोपिया पर शासन करने वाले अपराधियों को अपना काम करते रहने की न केवल अनुमति दी जा रही है, बल्कि सन् २०१० से अब तक 'विदेशी मदद और निवेश' में भी ३० प्रतिशत की वृद्धि हो गई है. वहीं दूसरी ओर इसी अवधि में हजारों हजार इथोपियाई भूख से मर गए हैं.

तो अगली बार जब आपको इटली के तटों पर लाशों की पंक्तियों की तस्वीरें दिखाई दें, तो याद रखिए कि 'हार्न ऑफ अफ्रीका' में तकरीबन रोज ही यह दृश्य उपस्थित होता रहता है. लेकिन शायद इसे टिप्पणी के लायक ही नहीं समझ जाता और अंतरराष्ट्रीय मीडिया में लगातार छाए रहने वाले सभी टिप्पणीकार भी इसको लेकर आंख मूंदे हुए हैं.

(पृष्ठ २३ से...)

परमाणु बम पहले बनाए जाते हों लेकिन सीमा पर खड़े जवानों को बुनियादी हथियार न मिलते हों, जब निजी वाहनों की संख्या पर रोक लगाना व सार्वजनिक वाहनों को आरामदेह, सुरक्षित व समय का पाबंद बनाना किसी की प्राथमिकता में न हो- तब यह सवाल पूछना जरूरी हो जाता है कि यह कैसा विकास है जो आपके यहां तो चमकता है, दोनों हाथों लूटा जाता है लेकिन जो हमारे यहां विनाश बनकर घुमड़ता है और हमें लूटकर चला जाता है. इस चुनाव में उन्हें वोट हर्गिज न दें जिन्होंने हमारे इन हालातों को बदलने के लिए अब तक कुछ भी ठोस नहीं किया है.

चुनाव लोकतंत्र की एक ठोस प्रक्रिया तभी बनती है जब वह जनता के अंकुश में रहता है. इसलिए मतदाताओं से हमारी अपील है कि वे अपनी-अपनी जगह पर मतदाता मंडलों का गठन कर लें और चुनाव में क्या करना है, खुली चर्चा में इसका निर्धारण करें. यही जनता की राजनीति है जिसे खोजना, बनाना और सक्रियता से लागू करना है. वोट हमारी संपत्ति है जिसे हम अपनी समझ व मर्जी से उचित समझेंगे, उसे देंगे. इसलिए सारे उम्मीदवारों से कहिए : शांति से आइए, अपनी बात समझाइए और जाइए. हम अपना फैसला आप करेंगे. इस चुनाव के साथ-साथ चुनाव का भी और हम मतदाताओं का चेहरा भी हमेशा के लिए बदल जाए, यही हमारे इस घोषणापत्र का मुख्य बिंदु है.

परिचय भारती-१

श्री.तो.मु.चिदंबर रघुनाथन

कहानी, नाटक, उपन्यास, कविता, आलोचना, अनुसन्धान आदि साहित्य की सभी विधाओं में सफलतापूर्वक कलम चलानेवाले बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार एवं साम्यवादी श्री तो.मु.चिदंबर रघुनाथ का जन्म २० अक्तूबर १९२३ को तमिलनाडु के तिरूनेलवेली जिला में हुआ. पिताजी का नाम श्री मुत्तैया तोण्डमान और माताजी का नाम श्रीमती मुत्तुमालै. श्री भास्कर तोण्डैमान आपके बडे भाई हैं जिन्होंने अपनी लेखनी द्वारा तमिलनाडु के हर एक मन्दिर से तमिल भाषियों को परिचित कराया. मन्दिरों का संदर्शन करके अतिसुन्दर वर्णन करनेवाले आप जिलाधीश भी थे.

इन्टरमीडियट तक श्री चिदंबर रघुनाथन की शिक्षा तिरुनेलवेली में हुई. इसके बाद स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण आपकी पढ़ाई में बाधा पहुँची. कुछ दिनों तक आपको छिपकर भी जीना पड़ा. पढ़ाई रुक जाने पर भी साहित्य के प्रति आपकी रुचि बढ़ी. १९४१ से आप कहानी, कविता, लेख आदि लिखने लगे. आपकी यह साहित्य सेवा ६० साल तक जारी रही.

दिनमणि, मुल्लै, शक्ति शान्ति आदि पत्रिकाओं में आपने उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर विराजमान रहकर प्रशसंसनीय कार्य किया. यही नहीं सोवियत रूसी समाचार विभाग से प्रकाशित पत्रिका के संपादक भी रहे.

इनके तीन कहानी संग्रह हैं 'रघुनाथ कदैकळ' (रघुनाथ की कहानियाँ), 'चेट्रिल मलर्न्द चेन्दामरै' (पंक में खिला लालकमल), 'क्षणच्चित्तम' (क्षणिक चित्त). आपके तीन उपन्यास हैं 'पंचुम पशियुम' (भूख और रूई) 'पुयल' (तूफ़ान) और 'कन्निका' (कन्यका). इनमें पंचुम पशियुम उपन्यास १९५७ में चेकोस्लावाकिया की भाषा में और फिर जर्मन, रूस जैसी कई भाषाओं में अनूदित हुआ.

आपकी कविताएँ अथाह हैं. वे हृदय को छूनेवाली ही नहीं बल्कि हमारे विचारों को उकसानेवाली भी हैं. 'गंगैयुम काविरियुम' (गंगा और कावेरी) में महाकवि भारति और कविराज रवीन्द्रनाथ टैगोर की तुलना की है. यह ग्रन्थ आपकी गहरी विद्वत्ता का मिसाल है. 'भारतियुम शेल्लियुम' (भारति और शेल्ली) नामक आपका ग्रन्थ दो बार प्रकाशित हुआ. 'भारति कालमुम करुत्तुम' (भारति का जीवन काल और उनके चिन्तन) में उनके जीवन काल की सामाजिक व्यवस्था और आज की सामाजिक व्यवस्था की तुलना की गयी है.

अनुवाद विधा में भी आपकी सेवा बहुत ही महत्वपूर्ण है. इनकी कई रचनाएँ केरल, दिल्ली, मदुरै कामराज आदि विश्वविद्यालयों, श्रीलंका के शिक्षा प्रशिक्षण विद्यालय, तिरुनेलवेली के पाळैयंकोट्टै सेवियर स्कूल आदि में पाठ्यपुस्तक चुनी गयी हैं.

१९८४ में साहित्य अकादमी पुरस्कार और शील्ड से आप पुरस्कृत हुए. इसके अलावा सोवियत रूस के नेहरू पुरस्कार, तंजाऊर विश्वविद्यालय की तमिलन्नै (तमिलमाता) उपाधि, कंबन कष़कम के पुरस्कारों एवं शील्डों से आप विभूषित हुए.

तो.मु.चि.नाम से सुप्रसिद्ध बहुमुखी प्रतिभावान महान साहित्यकार, साम्यवादी श्री तो.मु.चिदंबर रघुनाथन तमिल भाषा की सेवा करते हुए ११, दिसंबर २००१ को हृदयाघात के कारण पाळैयंकोट्टै में अपने पुत्र के घर पर अपना भौतिक शरीर छोड़ा.

अपनी कविता 'मीण्डुं मीण्डुं पिरप्पेन' (बार बार जनम लूँगा) द्वारा आप अपना अमरत्व कायम करते हैं. अतः आप आज भी अपने साहित्य के कारण तमिलभाषियों के बीच जीवित हैं. **(शबरी समाचार से साभार)**

त्रिभाषा कोशों का तिलक - शबरी शब्द सागर

हिन्दी से हिन्दी से इंग्लिश से तमिल ५१,००० शब्द संग्रह

शब्दों का भरमार, अर्थ सहित उपहार, राष्ट्रभाषा रक्षक, तमिल-अंग्रेजी के शिक्षक, आकार में आकर्षण, लाखों शब्दों का प्रदर्शन, अनुपम, आधुनिक तथा संतोष जनक, सालों का परिश्रम, पाठकों को आराम, विद्वानों से संपादित, विभूषणों से प्रेरित, हर हिन्दी हृदय का प्यारा, सदा रहान्यारा, हर घर में हिन्दी साथ रहे शबरी शब्द सागर बन बिन्दी, आचार्यों से अनुमोदित आजीवन सहायक, अपने लिए जरूर, एक पुरस्कार देने भी लायक. **संपर्क : ०९४४३१६५४१४**

Waves of words with proper meaning Savior of Hindi Serves Tamil & English Attractive in Size Lakhs of words into practice Incomparable, Incredible and Satisfactory Efforts of years, Roaders Treasure Compliled by Scholars appreciated by Masters A Boon to every one Unique and Useful experts choice, Essential for all One for Own, purposeful for presentation.

₹.750-00

विस्थापन का दर्द : वास्तविक या कृत्रिम

बजरंग मुनि

मुजफ्फरनगर दंगों के बाद बडी संख्या में मुसलमानों का पलायन हुआ और वे निकटवर्ती शांत क्षेत्रों में तात्कालिक रूप से रहने लगे. ऐसे लोगों की हालत दयनीय थी. उनकी स्थिति को देखकर मन करूणा से भर जाता था. यहाँ तक कि तटस्थ हिन्दुओं का भी. ऐसे पलायन कर चुके कुछ लोगों में से कुछ लोग अपने-अपने घरों में वापस चले गये. यद्यपि उन्हें वापस जाने में भी डर लग रहा था, लेकिन वे कुछ खतरा उठाकर भी अपने-अपने घरों को लौट गये. उत्तरप्रदेश की अखिलेश सरकार ने भी उन्हें वापस जाने में मदद की यहाँ तक कि वापस जानेवाले परिवारों को पाँच-पाँच लाख तक की आर्थिक सहायता भी दी गई. फिर भी कुछ लोग कैम्पों में रूके रह गये. यहाँ तक कि कुछ लोग तो पाँच लाख रूपया सहायता लेने के बाद भी वापस नहीं गये और कुछ लोग आज तक वापस जाने को तैयार नहीं हैं.

प्रारंम्भिक काल में कँम्पों में पेशेवर सांम्प्रदायिक राष्ट्र विरोधी तत्वों का समावेश नहीं था. धीरे-धीरे इन कँम्पों में ऐसे तत्वों का समावेश होता गया तथा बचे हुए लोगों में से अनेक ने इस घटना को एक व्यवसाय मानकर राज्य सरकार का अधिकतम शोषण करने का प्रयास शुरू किया. ऐसे तत्व एक ओर तो भय का नाटक करते थे, दूसरी ओर अधिक से अधिक करूणा के दृश्य दिखाने का भी नाटक करते थे. तीसरी ओर इनके एजेंट मीडिया के माध्यम से उत्तरप्रदेश सरकार या भारत सरकार पर भी ऐसा दबाव बनाते थे जैसे कि कैंम्प में बचे लोगों को बहुत ही अमानवीय स्थिति में रहना पड रहा है. अखिलेश सरकार ने बहुत हिम्मत करके ऐसे कैंम्पों को बन्द करने का प्रयास किया. इसका लाभ अन्य राजनैतिक दलों ने भी बहुत उठाया और अब भी कुछ लोग अपने कैंम्पों में बचे हुए हैं. स्पष्ट दिखता है कि जो लोग वापस हुए हैं. उनसे किसी के साथ कोई दुर्घटना नही हुई है. फिर भी या तो ये लोग जाना नहीं चाहते हैं या पेशेवर राजनेता अपने राजनैतिक लाभ के लिए उन्हें रोककर रखना चाहते हैं.

(क्रमशः)

हिंदी की सेवा में... एक सार्थक यात्रा...
शबरी शिक्षा समाचार

- डॉ.सी.जयशंकर बाबु, पुदुच्चेरी

शबरी शिक्षा समाचार मासिक पत्रिका के प्रकाशन का यह १६ वाँ वर्ष है. आमतौर पर इन्सान के संदर्भ में १६ वर्ष की आयु को किशोरवस्था के महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में माना जाता है, जिस समय बाल्यावस्था को पारकर परिष्कृत व परिमार्जित व्यवहार व कुशलताओं के साथ एक वयस्क होने का संकेत मिल जाता है. उन्मुक्त व स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ उभरने की दिशा में आगे बढ़ना शुरू हो जाता है. बारहवें वर्ष पारकर तेरह वें वर्ष में प्रवेश से लेकर उन्नीस वर्ष तक की अवस्था को अंग्रेजी में टीनेज कहा जाता है. ऐसी अवस्था में विचारों की परिष्कृति, व्यवहार में मानकता आदि शुरू हो जाती हैं. शबरी के संदर्भ में भी मैं लगभग यही मानता हूँ. जैसे शबरी शिक्षा समाचार की टीन एज शुरू हो गई, यह सारे शानदार परिवर्तनों के साथ सामने आई थी, अब अपनी इस यात्रा में पत्रिका स्तरीयता व विविधता की दृष्टि से आकर्षणीय बन रही है.

इसने आज तक हिंदीतर भाषियों की असंख्य रचनाओं को शामिलकर उनकी सर्जना को विशिष्ट संबल दिया है. अपने प्रकाशन के दूसरे दशक तक पहुँचते-पहुँचते पत्रिका में सर्जनात्मक साहित्य के अलावा स्तरीय व उपयोगी लेखों के प्रकाशन की परंपरा शूरू हो गई. पत्रिका के साथ कई नए स्तंभ भी जुड़ गए हैं. आरंभ में बड़े आकार (१/४) में श्वेत-श्याम रूप में प्रकशित यह पत्रिका कालांतर में आकर्षक रंगीन आवरण पृष्ठों के साथ छोटे आकर (१/८) में अधिक पृष्ठों के साथ निकलने लगी है. कुछ समय तक पृष्ठों की संख्या में वृद्धि की गई थी. अपनी इस अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते पत्रिका को समूचे तमिलनाडु तक तथा दक्षिण भारत के अधिकांश गावों, शहरों तक अपने प्रसार को बढ़ाते हुए भारत के लगभग सभी राज्यों के कोने-कोने तक के पाठकों,

लेखकों, हिंदी सेवियों, हिंदी प्रेमियों, हिंदी प्रचार संस्थाओं, शैक्षिक-साहित्यिक संस्थाओं, पत्रकारों, प्रकाशकों तक पहुँचते हुए ई-पत्रिका के रूप में भी इसकी प्रतियाँ ई-मेल द्वारा पीडीएफ रूप में असंख्य राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय पाठकों तक भी पहुँच रही है इसके १६ वर्षों से नियमित पाठक व समय-समय पर इसमें अपनी रचनाओं को शामिल करने का भी मुझे अवसर मिला है. दक्षिण की पत्रकारिता के इतिहास में शबरी की सेवाओं का उल्लेख करने का भी मुझे मौका मिला है.

इसमें प्रकाशित हो रही सामग्री में कुछ स्थाई व नियमित स्तंभ है (जैसे संपादकीय, आध्यात्मिक स्तंम्भ जैसे अनमोल वचन, श्रीमती अलमेलु कृष्णन द्वारा तमिल साहित्यकारों के व्यक्तित्व-कृतित्व पर केंद्रित परिचयात्मक लेख, बच्चों की रचनाओं से सज्जित नवांकुर, पुस्तक समीक्षा आदि. इनके अलावा कविताएँ, वैचारिक लेख आदि प्रकाशित होते हैं. समाचार और पाठकों के पत्र भी अक्सर पत्रिका में शामिल हो जाते हैं. तमिल और संस्कृत में लेख, हिंदी तमिल, अंग्रेजी भाषा सीखने की दृष्टि से वार्तालाप के पाठकों का प्रकाशन भी एक उपयोगी पहल है. वास्तव में यह पत्रिका बहुभाषाई पत्रिका के रूप में उभररही है.

इस महत्वपूर्ण पडाव पर पहुँचकर पत्रिका की जिम्मेदारी और बढ रही है. इस दिशा में उसकी उपयोगिता व प्रासंगिता और बढाने की दिशा में कदम उठाने की जरूरत है. तमिल साहित्य के समृद्ध साहित्यिक इतिहास को धारावाहिक प्रकाशन करने से हिंदी भाषियों को, गैर-तमिल भाषियों को हिंदी के माध्यम से तमिल साहित्यिक गरिमा से परिचय मिल सकता है. इसमें तमिल व दक्षिण की अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यिक गतिशीलता कापरिचय मिलता रहेगा. हिंदीतर पाठकों के लिए हिंदी के मूर्द्धन्य रचनाकारों की सर्जनात्मक रचनाएँ भी उपयोगी होंगी. पत्रिका अपनी स्तरीयता व उपयोगिता बढाने के लिए पूरे दक्षिण में हिंदी की गतिविधियों का नियमित आकलन सहित कई नए स्तंभों को शुरू कर सकती है. समय-समय पर विभिन्न विषयों पर केंद्रित विशेषांकों के प्रकाशन की भी प्रासंगिता रहेगी. आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग है, पाठकों के डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए

तकनीकी स्तंभ का भी प्रारंभ करना उपयोगी होगा.

भविष्य में टैबलेट, स्मार्टफोन आदि के लिए उपयोगी संस्करण के रूप में शबरी को रूपांतरित कर ई-प्रकाश के रूप में सर्वत्र इसकी पहुँच हो. ऐसी आशा है. कुछ मिलाकर दक्षिण से निकलनेवाली पत्रिका होने की वजह से दक्षिण में सर्जनात्मक लेखन के लिए विशिष्ट संबल सुनिश्चित करते हुए यह पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति हासिल करें. आज तक की उपलब्धियों के लिए शबरी का हार्दिक अभिनंदन करते हुए इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ. आमातौर परप्रकाशकों द्वारा प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में अधिकांश पुस्तकों को विज्ञापनों से ही भर दिया जाता है, ऐसी संकुचितता से मुक्त होकर शबरी की जो सचेत यात्रा जारी है, वह हिंदी व हिंदी-प्रेमियों के लिए वरदान है.

समाचार भारती-४

शबरी परिवार मिलन

मानव जीवन में ऐसी अनेकानेक बातें हैं जो मनुष्य मन को संतोष के साथ साथ आनंदविभोर बना देती हैं. मानव मन कुछ ऐसी बातों से भर जाता है. सुख तथा आनंद का अनुभव करता है जो अन्य किसी भी बात से कभी किसी को मिलनेवाला ही नहीं है. मिलन सुख मनुषय के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान पाता है. अपने प्रियजनों, सज्जनों, बंधु, मित्रों तथा सह विचार रखनेवाले किसी भी मित्र से मिलकर हम अत्यंत खुशी का अनुभव करते हैं. प्रतीक्षा के बाद या अप्रतीक्षित रूप से जो मिलन होता है उसे शब्दों में प्रकट करना काफी मुश्किल है. इस सुख को तो अनुभव मात्र से अपना सकते हैं. कभी किसी भी रूप से इस अनंत तथा आनंदमय सुखका वर्णन बडे से बडे कवि व लेखक के लिए भी निसंदेह नामुमकीन है. मिलन के हर पल मनोहर होते हैं. मन में ये अपने लिए अलग तथा अमिट स्थान बना लेते हैं. कभी ये विचारों से दूरी नहीं जाते मनुष्य को वे सदा इस सुख का अनुभव प्रदान करते रहते हैं.

तमिलनाडु के सेलम जिले के शबरी शिक्षा संस्थान के द्वारा शबरी परिवार मिलन का आयोजन तमिलनाडु की राजधानी चेन्नै में किया गया था. शबरी

शिक्षा समाचार द्वारा मिलन का शुभ समाचार हिन्दी हृदयों तक पहुँचाया गया. चैन्नै टी. नगर स्थित पिटि त्यागरायर हाल में १६ फरवरी २०१४ रविवार को आयोजित इस भव्य समारोह का शुभारंभ द्वीप प्रज्वलन के साथ श्रीमती धनलक्ष्मी चिन्नै ने किया था. प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि श्री प्रदीप के.शर्मा, उप निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, चेन्नै ने शबरी शब्द सागर-हिन्दी-हिन्दी-अंग्रेजी-तमिल, त्रिभाषा कोश का लोकार्पण किया. तमिलनाडु, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के कोषाध्यक्ष श्री बी.चिन्नैयन विशेष अतिथि के रूप में भाग लेकर पहली प्रति प्राप्त किये थे. शबरी की अनमोल सेवाओं का वर्णन दोनों ने किया. कोशकारों को सराहते हुए उन्होंने कहा कि शबरी शब्द सागर ५१००० शब्दों का भंडार है. शबरी शब्द सागर की योग्यता प्रशंसनीय है. तमिलनाडु के मूर्धन्य हिन्दी सेवी डॉ.पी.के.बालसुब्रह्मणियम, डॉ.एम.शेषन, डॉ.एन.सुन्दरम तथा डॉ.र.शौरीराजन ने अपने अनुपम शब्दों से शबरी शब्द सागर पर अपने विचार जिस प्रकार से व्यक्त किये थे उसे हिन्दी हृदय कभी भूल नहीं सकते. प्रथम सुख अवर्णनीय रहा.

द्वितीय मिलन सुख में विशेष अतिथि मेजर मोहम्मद अशरफ खान, मुख्य महा प्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड, चेन्नै, मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेकर हिन्दी हृदयों को प्रफुलित किया. उनके हर शब्द हिन्दी हृदय में जोश भरने लायक रहा. श्री जी. सेल्वराज, सचिव, तमिलनाडु, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के मधुर शब्द मनमोहक रहे. परिवार मिलन को सही अर्थ में परिवार मिलन स्थापित करने की शक्ति उनके शब्दों में थी. तमिलनाडु प्रांत, भारत के संपूर्ण प्रातों से मात्र नहीं अमरीका, केनडा की भी रचनाओं से भरी शबरी साहित्य लहरी महाविशेषांक का लोकार्पण किया गया था. लोकार्पण के बाद सब लोगों ने इस अनमोल काम का अभिनंदन किया. हिन्दी पंडितों के मुख से साहित्य लहरी के गुणों का वर्णन अति मधुर लगा. अविस्मरणीय भी रहा.

तृतीय मिलन सुख सम्मान समारोह से हुआ. तमिलनाडु भर के पाँच महान हिन्दी सेवी श्रीमती अलमेलु कृष्णन, डॉ.एल.तिल्लै सेल्वी, डॉ.सी.जय शंकर बाबु, श्रीमती शान्ता शर्मा, श्री वी.विजयकुमार आदि अतुल हिन्दी सेवी

सम्मान से सम्मानित किये गये. तमिलनाडु में हिन्दी साहित्य सेवा करनेवाले नौ विशिष्ट साहित्यकार डॉ.बालशौरि रेड्डी, डॉ.पी.के.बालुसुब्रह्मणियम, श्री टी.ई.एस.राघवन, डॉ.इन्दरराज बैद, डॉ.एम.शेषन, डॉ.र.शौरिराजन, डॉ.सुब्रह्मण्यन्, एस.विष्णुप्रिया, डॉ.एन.सुन्दरम, श्री आर.जे.संतोष कुमार शबरी साहित्य शिरोमणि सम्मान से सम्मानित किये गये. सम्मान पत्र के साथ चाँदी के पदक भी दिये गये. हिन्दी के गौरव बढाने में ऐसे महान कार्यों का स्थान काफी महत्वपूर्ण है.

हर्ष की बात है कि शबरी से आयोजित इस परिवार मिलन में तमिलनाडु मात्र नहीं भारत भर के विशिष्ट हिन्दी सेवी भाग लिए थे अनेक हिन्दी सेवियों को मंच पर पहली बार बोलने का मौका मिला.

अनेकानेक हिन्दी प्रेमियों से मिलकर उस दिन हमें जो संतुष्टि प्राप्त हुई थी उसे प्रकट करना असंभव है. घर घर में हिन्दी हर मन में हिन्दी नारा सहित तमिलनाडु की राजधानी चेन्नै में आयोजित शबरी परिवार मिलन कालजयी मिलन है. हमें आशा है कि इस प्रकार के मधुर मिलन तमिलनाडु के हर शहर में संपन्न हो. हर शहर में हिन्दी का संगम जरूर हो.

जय हिन्दी. **(शबरी शिक्षा समाचार से साभार)**

डॉ.सी.जयशंकर बाबु सम्मान का उत्तर देते हुए